International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 981-982

विष्णु पुराण में वास्तु कला

प्रीति विजय
संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

विष्णु पुराण में वास्तुकला के विकास से सम्बन्धित अनेकों उदाहरण मिलते हैं। मन्धाता की स्त्रियों के महलों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि उनके महल उपधान (मनसद्), शय्या और परिच्छद आदि से युक्त थे तथा उनमें जलाशय एवं खुले स्थान का भी वर्णन मिलता है।[1]

1. दुर्ग

विष्णु पुराण में कला विषयक विवेचनों से ज्ञात होता है कि उस समय स्वाभाविक दुर्ग के अतिरिक्त कृत्रिम दुर्ग भी बनाए जाते थे। इनके अतिरिक्त पुर एवं खर्वट (पहाड़ या नदी के तट पर बसे हुए छोटे–छोटे टोले) का भी वर्णन मिलता है। उन पुरों में शीत एवं घाम आदि से बचने के लिए घरों को बनाया गया था।[2]

2. महल एवं दुर्जय दुर्ग

विष्णु पुराण में श्रीकृष्ण द्वारा निर्मित ऐसे दुर्जय दुर्ग का वर्णन मिलता है जिसमें स्त्रियाँ भी आसानी से युद्ध कर सकती थी। यह कला का एक अद्भुत नमूना है। इसके अतिरिक्त द्वारकापुरी को सैंकड़ों सरोवर, 'महान उद्यान, गहरी खाई और अनेकों महलों से सुशोभित किया गया है।[3] वायु पुराण के अनुसार नगरादि को चारों ओर से व्रप से परिवेष्टित रखना चाहिए।[4]

3. महलों की सजावट

विष्णु पुराण के अध्ययन से ज्ञात होता है कि महलों को न केवल सुरक्षित करने के लिए ही उपाय किए जाते थे, अपितु उनकी सुन्दरता पर भी विशेष ध्यान दिया जाता था। हिरण्यकशिपु के महल को स्फटिक एवं अभ्र–शिला से अत्यन्त मनोहर बनाया गया था।[5]

4. स्तम्भ

विष्णु पुराण में कला का अद्भुत वर्णन मिलता है। विष्णु पुराण में सुवर्ण–निर्मित स्तम्भ वाले भवन का उल्लेख मिलता है।[6] अन्यत्र विष्णु पुराण में स्तम्भ को दर्पण युक्त भी बताया गया है।[7]

मत्स्य पुराण में भी दर्पण युक्त स्तम्भों का वर्णन मिलता है।[8]

5. द्वार

विष्णु पुराण में राजा कंस के महल को रंगद्वार से अलंकृत बताया गया है।[9]

ब्रह्माण्ड पुराण में सिंहद्वार का उल्लेख मिलता है।[10]

डॉ. नत्थूलाल गुप्त के अनुसार महाभारत काल में वास्तुकला का अच्छा विकास हो चुका था। उस समय के नगरों को हर्म्य, प्राकार तथा विमानों से युक्त अट्टालिकाओं वाला कहा गया है। राजाओं की राजधानी प्रायः सुदृढ़ प्रकार तथा तोरण से युक्त होती थी। किसी भी नगर के निर्माण से पहले यह निर्धारण किया जाता था कि परिखा, प्राकार, राजप्रसाद गोपुर, चत्वक, वीथी आदि स्थान कहां होंगे।[11]

डॉ. मंजुला जायसवाल के अनुसार रामायण काल में भी कला का काफी विकास हो चुका था। उनके अनुसार नगर के प्राकार में विशाल द्वारों का निर्माण किया जाता था। ये द्वार स्वर्ण के बने होते हैं। लंका के प्राचीर में चार विशाल द्वारों का वर्णन मिलता है। इन द्वारों पर अस्त्र–शस्त्र के ढेर रखे जाते थे। इन द्वारों पर चार लम्बे चौड़े पुलों का निर्माण किया गया था। इन द्वारों का प्रयोग युद्ध के समय किया जाता था। पुलों पर लगी कलों को घुमाते ही खाई में जल बढ़ने लग जाता था।[12]

विष्णु पुराण में द्वारों की संख्या के विषय में तो स्पष्ट नहीं किया गया है परन्तु नगर के द्वार का वर्णन मिलता है। यहां पर राजा ज्यामघ के विजयी होकर लौटने का वर्णन है।[13]

वायु पुराण में कहा गया है कि नगर को द्वार युक्त होना चाहिए। द्वारों की संख्या चार बताई गई है। कहीं–कहीं द्वारों की संख्या की अनेकता का भी वर्णन मिलता है। द्वारका नगरी को अनेक द्वारों से युक्त बताया गया है।[14]

सन्दर्भ

1. जलाशयास्सोपधानाः सावकाशास्साधुशय्या परिच्छदाः प्रासादाः क्रियन्तामित्यादिदेश।। – वि.पु. 4/2/98
2. कृत्रिमं च तथा दुर्गंपुरखर्वटकादिकम्। गृहाणि च यथान्यायं तेषु चक्रुः पुरादिषु। शीतातपादिबाधानां प्रशमाय महामते।। – वि.पु. 1/6/18–19

3. तस्माद्दुर्गं करिष्यामि यदूनामरिदुर्जयम्।
   स्त्रियोऽपि यत्र युद्धेयुः किं पुनर्वृष्णिटगपुङ्गवोः।।
   महोद्यानां महाव्रपां तटाकशतशोभिताम्।। – वि.पु. 5/23/11, 14
4. वायु पु. 8/104
5. तत्र प्रनृताप्सरसि स्फाटिकाभ्रमयेऽसुरः।
   पपौ पानं मुदा युक्तः प्रासादे सुमनोहरे।। – वि.पु. 1/17/9
6. आकृष्य च महास्तम्भं जातरूपमयं बलः। – वि.पु. 5/28/25
7. स्तम्भस्थर्पणस्येव योऽयमासन्नतां गतः।
   छायादर्शनसंयोगं स तं प्राप्नोत्यथात्मनः।। – वि.पु. 2/11/19
8. म.पु. 255/4
9. धातीनयौः नियुद्धाय रङ्गद्वारमुपागतौ। – वि.पु. 5/2/23
10. ब्रह्म. पु. 3/32/11
11. महाभारतकालीन समाज और शिक्षा, नत्थूलाल गुप्त, पृ. 265
12. वाल्मीकि युगीन भारत, डॉ. म जुला जायसवाल, पृ. 607–608
13. विजयिनं च राजा.....द्रष्टुमधिष्ठानद्वारमागता।। 4/12/24
14. वा.पु. 8/104, 101/234, 86/27